एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

फसल विविधीकरण: किसानों के लिए एक उत्तम विकल्प

(*मंदीप कुमार, दीपक कुमार एवं सत्य प्रकाश)
भाकृअनुप-राष्ट्रीय डेरी अनुसंधान संस्थान, करनाल-132001, हरियाणा
*संवादी लेखक का ईमेल पता: mbedwal527@gmail.com

भारत की जनसंख्या लगभग 138 करोड़ है और 70 प्रतिशत से अधिक आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है, जहां मुख्यतः लोग कृषि पर आधारित है| देश में मुख्य रूप से छोटे जोत वाले किसान पाए जाते हैं जिनके खेत का आकार 1.5 हेक्टेयर से कम है और वह लगभग 55 फ़ीसदी कृषि योग्य भूमि पर खेती करते हैं| 93 प्रतिशत किसानों के पास 4 हेक्टेयर से भी कम खेत है| भारत में विविध कृषि जलवायु परिस्थिति के कारण बड़ी संख्या में कृषि वस्तुओं का उत्पादन होता है| मोटे तौर पर इन्हें दो समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है:- खाद्यान फसले और वास्तविक फसलें|

फसल विविधीकरण का तात्पर्य नई फसलों या फसल प्रणालियों से किसी उत्पादन को जोड़ना है, जिसमें एक विशेष कृषि क्षेत्र पर कृषि उत्पादन के पूरक विपणन अवसरों के साथ मूल्य वर्धित फसलो से विभिन्न तरीकों से लाभ मिल सकता है| धान-गेहूं फसल पद्धति भारत की एक मुख्य फसल प्रणाली है| देश में इसके अंतर्गत लगभग 45 मिलियन हेक्टेयर में धान और 29.8 मिलीयन हेक्टेयर में गेहूं का क्षेत्रफल है|

फसल विविधीकरण का प्रमुख उद्देश्य किसी भी क्षेत्र में भिन्न प्रकार की फसलों के उत्पादन में व्यापक विकल्प देना है ताकि विभिन्न फसलों पर उत्पादन संबंधी गतिविधियों का विस्तार किया जा सके और जोखिम भी कम किया जा सके| जब हम आत्मनिर्भर भारत की बात करते हैं तो फसल विविधीकरण एक महत्वपूर्ण घटक है जिसके बिना हम इस लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकते| भारत अभी भी खाद्यान्न, तेल और दलहन का भारी मात्रा में दूसरे देशों से आयात करता है जबकि धान और गेहूं का जरूरत से अधिक उत्पादन कर रहा है, इसलिए आज फसल विविधीकरण किसानों की आय बढ़ाने तथा देश की जरूरत को पूरा करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण विकल्प बन चुका है|

फसल विविधीकरण मुख्य रूप से दो प्रकार का होता है:-

सम स्तरीय विविधीकरण:- इस विधि के अंतर्गत प्रचलित या कम लाभकारी फसल को अधिक लाभकारी फसलों से प्रतिस्थापित कर दिया जाता है|

ऊर्ध्वाधर विविधीकरण:- इस विधि द्वारा फसल प्रसंस्करण कर बाजार मूल्य में वृद्धि की जाती है| इससे अधिक लाभ होता है और साथ-साथ रोजगार के अवसर भी पैदा होते हैं|

फसल विविधीकरण के सिद्धांत:

- कम आय वाली फसल का अधिक आय वाली फसल से प्रतिस्थापन करना|

- एकल फसल से बहु फसल या मिश्रित फसल प्रणाली में परिवर्तन|
- अधिक पानी वाली फसलों की जगह कम पानी वाली फसलों का उत्पादन करना|
- दलहनी या तिलहन फसलों का चयन करना|
- कृषि उत्पादन के साथ-साथ उत्पादन का प्रसंस्करण करना|

ऋतु के अनुसार धान-गेहूं फसल पद्धति के लिए विभिन्न विकल्प:

1. फसल प्रतिस्थापन

धान:-

खाद्यान्न:- मक्का, ज्वार, बाजरा

दलहन:- अरहर, मूंग ,उड़द

तिलहन:- सोयाबीन, मूंगफली

सब्जियां:- टमाटर, बैंगन, मिर्ची, भिंडी

चारा:- सूडान घास, लोबिया

गेहूं

खाद्यान्न:- जौ, रबि मक्का

दलहन:- मसूर, चना, मटर

तिलहन:- अलसी, सरसों

सब्जियां:- आलू, प्याज, गोभी

चारा:- बरसीम

2. फसल सघनीकरण:

ग्रीष्मकालीन फसले:- ग्रीष्म मक्का

दलहन:- उड़द, मूंग, लोबिया

सब्जियां:- भिंडी, लौकी

चारा:- मक्का, लोबिया

एकल फसली व्यवस्था की प्रमुख समस्याएं:-

- **मृदा स्वास्थ्य में गिरावट:-** लगातार एक ही फसल की वजह से पोषक तत्वों की कमी हो जाती है|
- **पर्यावरण प्रदूषण:-** धान के खेत से मीथेन निकलती है जो कि प्रमुख ग्रीनहाउस गैस है| इसके अलावा फसल कटाई के बाद अवशेष खेत में ही जला दिया जाता है जिससे काफी मात्रा में वायु प्रदूषण होता है|
- उत्पादन लागत में विधि लगातार एक ही प्रकार के फसल उगाने से उर्वरक की मात्रा प्रति इकाई बनानी पड़ती है|
- रोग एवं कीट के प्रकोप में वृद्धि|
- पारिस्थितिक असंतुलन|

फसल विविधीकरण के लाभ:-

- ✓ **छोटी भूमि पर आय में वृद्धि:-** वर्तमान में 70 से 80 फ़ीसदी किसानों के पास 2 हेक्टेयर से कम भूमि इकाई है| इसे दूर करने के लिए मौजूदा फसल प्रणाली को उच्च मूल्य वाली फसलों द्वारा प्रतिस्थापित किया जा सकता है|
- ✓ **आर्थिक स्थिरता:-** फसल विविधीकरण विभिन्न कृषि उत्पादों की कीमत में उतार-चढ़ाव को बेहतर ढंग से वहन कर सकता है|
- ✓ **संतुलित भोजन की मांग:-** अधिकांश भारतीय आबादी कुपोषण से पीड़ित है| खाद्य टोकरी में सब्जी, तिलहन, दलहन इत्यादि फसल गुणवत्ता बढ़ाकर सामाजिक आर्थिक स्थिति में सुधार कर सकते हैं|
- ✓ **संरक्षण:-** फसल विविधीकरण को अपनाने से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण में मदद मिलती है|